पद्मावत में प्रेम का स्वरूप

डॉ. सीताराम मीना
व्याख्याता – हिन्दी
स्व. राजेष पायलट
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बांदीकुई, दौसा

रेखांकित शब्दः– प्रेमाख्यान, आख्यान, सूफी, समासोक्ति, अन्योक्ति, आध्यात्मिक, व्यंजना, आलम्बन, मानवीकरण, मण्डनात्मक।

सारांष

प्रेमाख्यान परम्परा का समृद्ध इतिहास है। प्रेमाख्यान शब्द प्रेम और आख्यान दो शब्दो से बना है। आख्यान का शाब्दिक अर्थ है–कोई पुरातन वृतान्त अथवा कथानक। कहानी एवं पुराणों को भी आख्यान कहने की परम्परा रही है। हिन्दी साहित्य में प्रेमाख्यान का अर्थ है–प्राचीन कथा जो प्रेम पर आधारित हैं। प्रेम शब्द का प्रयोग सूफियों ने एक विषेष अर्थ में किया है। सूफियों में लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम वर्णन की परम्परा रही है। अतः प्रेमाख्यान परम्परा में प्रेम का अर्थ लौकिक तथा अलौकिक प्रेम दोनों ही ग्रहण किया जाना है। 1

सूफी प्रेमाख्यान काव्य परम्परा का मूल तत्व क्या है? इस विषय में अनेक विद्वानों के पृथक–पृथक मत है। प्रमुख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कथन महत्वपूर्ण है। उनका मत है कि सूफी कवियों ने जिन कहानियों को प्रेमाख्यान का आधार बनाया है वे सब हिन्दूओं के घरो में बहुत दिनों से चली आ रही है। इन कहानियों में आवष्यकतानुसार कुछ परिवर्तन किया गया है। कहानियों का उत्स हिन्दू धर्म है।

सोलहवी सदी में हिन्दी का प्रमुख प्रेमाख्यानक काव्य पदमावत रचा गया इसे भाव एवं भाषा की दृष्टि से अद्वितीय रचना कहा जा सकता है। पदमावत की प्रमुखता इससे स्वयं झलकती है क्योंकि पदमावत ने अपने परवर्ती सभी प्रेमाख्यान रचनाओं को अत्यधिक प्रभावित किया।

प्रस्तावना

सूफी अपने आराध्य को निराकार मानते है। अतः उसके प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति प्रकट रूप में करना संभव नहीं है। वास्तव में सूफी कवियों ने निराकार ईष्वर को प्रेम से प्राप्त करने पर बल दिया है। इस उद्देष्य से समासोक्ति द्वारा उस अलौकिक शक्ति को प्राप्त करने की बात कही है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अतिरिक्त अयोध्यासिंह उपाध्याय, डॉ. श्यामसुन्दर दास ने भी स्वीकार किया हैं कि इन कहानियों की साहित्यिक परम्परा विद्यमान थी। कुछ विद्वान इससे सहमत नहीं है, उनका कहना हैं कि इन कहानियों की साहित्यिक परम्परा नहीं थी तथा ये कहानियॉ लोक प्रचलित थी। डॉ. हीरालाल शास्त्री का मत इससे भिन्न है उनका मानना हैं कि प्रेमाख्यान परम्परा पूर्णतः भारतीय परम्परा है और यह वैदिक युग से चली आ रही है।

ऋग्वेद में उर्वषी– पुरूरवा यम–यमी संवाद आदि प्रेमाख्यान मिलते है। उपनिषदो में याज्ञवल्क्य, गार्गी, इन्द्र – अहिल्या आख्यान मिलते है। महाभारत के अतिरिक्त संस्कृत में कादम्बरी, अभिज्ञान शकुन्तलम, विक्रमोर्वषीय वासवदत्ता, मालती माधव आदि अनेक प्रेमाख्यानों की रचना हुई। यहां अंतर केवल इतना हैं कि भारतीय प्रेमाख्यानों में लौकिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है। अपभ्रंष के चरित काव्यों में भी प्रेम का स्वरूप कुछ अलग प्रकार का है। इनमें प्रेम लौकिक होता है तथा बाद में प्रेमी प्रिया को छोडकर तपस्वी और योगी बन जाता है। यह प्रेम भी सूफी प्रेमाख्यानों से अलग प्रकार का है।

आदिकालीन प्रेमाख्यानों में लौकिक श्रृंगार का वर्णन प्रमुखता से किया गया है तथा नायक को प्रधानता दी गई हैं इन रचनाओं में लौकिक प्रेम कथा कहना ही रचनाकार का उद्देष्य रहा है। सभी रचनाकार हिन्दू धर्मावलम्बी थे।

सूफी प्रेमाख्यान रचनाओं में चन्दायन, मृगावती, पदमावत, मधुमालती, चित्रावली, युसुफ जुलेखा आदि रचनाएं प्रमुख हैं इनमें श्रृंगार रस के साथ साथ शांत रस की भी चर्चा हुई है। ये सभी नायिका प्रधान रचनाये है तथा नायिका को ईष्वर का रूप माना गया है। इनमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है।

भारतीय सूफी कवियों ने लौकिक प्रेमाख्यान परम्परा का मिश्रण करके एक नवीन प्रेमाख्यान परम्परा को जन्म दिया। इस परम्परा का प्रथम ग्रंथ मुल्ला दाउद द्वारा रचित 'चन्दायन' है। इसके प्रेमाख्यान में नूरक और चन्दा की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त कुतुबन की मृगावती तथा मंझन की मधुमालती विषेषतः उल्लेख्य है।

सूफी प्रेमाख्यान काव्यों में जायसी कृत पदमावत सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रेमाख्यानक है। पदमावत को प्रेमाख्यानको का षिरोमणि कहा जा सकता है। पदमावत उपसंहार के अतिरिक्त 57 खण्डो में विभक्त एक विषाल ग्रंथ है। इसके पूर्वार्द्ध की कथा काल्पनिक तथा उत्तरार्द्ध की कथा ऐतिहासिक का पुट लिए हुए है। नायक रत्नसेन की तुलना में नायिका पदमावती को अधिक महत्व दिया गया है। पदमावत के माध्यम से कवि ने प्रतीक रूप से सूफी साधना पर प्रकाष डाला है। कवि पदमावती को ईष्वर का रूप मानता है।

''प्रथम सो जोति गगन निरमई पुनि सो पिता माथे मनि भई।
पुनि वह जोति मातु घर आई तेहि ओसर आदर बहु पाई।। 1

जायसी ने पदमावत को मानसरोवर खण्ड में कवि ने सखियां के वार्तालाप द्वारा आध्यात्मिक संकेत भी दिये है।

ऐ रानी मन देखु विचारी। ऐहि मैहर रहना दिन चारी।
जौ लहि अहै पिता कर काजू। खेलि लेहु जौ खेलहु आजु।
पुनि सासुर हम गौनब काली। कित हम कित सह सरवर पाली।।

कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खैलब एक साथा।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारून ससुर न आवै देही।
पिउ पिआर सब उपर सो पुनि करै देह काह।
कहु सुख राखै की दुख दुहुं कस जनम निबाह। 2

मानसरोदक खण्ड में कवि ने पदमावत की अलौकिकता को अत्यधिक उभारा है। जायसी का उदाहरण द्रष्टव्य है –

सरवर रूप विमोहा हिये हिलोरई लई।
पांव छुवै मकु पावै यहि मिस लहरहि लेई।। 3

पदमावत के पूर्वाद्ध में सूफी साधना पद्धति के अनुसार सारी कहानी प्रतीक रूप में प्रस्तुत की गई हैं रत्नसेन एक साधक है और पदमावती एक आध्यात्मिक शक्ति है जिसे प्राप्त करने के लिये रत्नसेन अनेक कठिनाईयों को झेलता है। इस भाग में हीरामन तोते को अत्यधिक महत्व दिया गया है। पदमावती के सौन्दर्य का वर्णन रत्नसेन के समक्ष यही करता है। बाद में नागमति का त्याग, साधु वेष धारण करने का उल्लेख एवं सिंहलदीप प्रस्थान बडा ही मार्मिक है। अन्ततः षिव की सहायता से रत्नसेन का विवाह पदमावती से हो जाता है। राजा रत्नसेन नागमति का विरह संदेष पाकर पदमावती के साथ चित्तौडगढ लौट आता है। इस पूर्वाद्ध भाग में सूफी साधना के अनुरूप ही सभी प्रतीक जुटाये गये है।

पदमावत का उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक कहा जा सकता है। कुछ काल्पनिक पात्रों का भी सहारा लेकर महाकाव्य में प्रभावोत्पाकदता की व्यवस्था की गई है। दिल्ली का सुल्तान अल्लाउद्दीन खिलजी राघवचेतन के मुख से पदमावती के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर चित्तौड पर हमला कर देता है। छल कपट से रत्नसेन को बंदी बना लिया जाता है। उसके उपरांत रत्नसेन को भी इसी तरह छुडाया जाता है। गोरा–बादल के अपूर्व सौन्दर्य का वर्णन अत्यंत सुंदर है। रत्नसेन और देवपाल के परस्पर युद्ध मे दोनों एक दूसरे को मार देते है। पदमावती और नागमति दोनों रत्नसेन के शव के साथ सती हो जाती है। अलाउद्दीन के हाथ पदमावती की राख मात्र लगती है। राख को मुट्ठी में भरकर उडाता हुआ अलाउद्दीन कह उठता है कि यह संसार मिथ्या है। 4

इस तरह पदमावत में सूफी प्रेमाख्यानक काव्य के वे सब गुण विद्यमान है जिनके लिये सूफी प्रेमाख्यानकों की हिन्दी साहित्य में एक अलग पहचान है। इसमें प्रेम की पराकाष्ठा को चित्रित किया गया है। प्रेम की सुन्दर व्यंजना हुई है। कवि ने रत्नसेन और पदमावती के प्रेम की अमरकथा का वर्णन करते हुए लौकिक प्रेम द्वारा अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। इसलिए कुछ विद्वान इसे अन्योक्ति काव्य कहते है, तो कुछ समासोक्ति काव्य कहते है। यह सूफी महाकाव्य एक महान प्रेमाख्यानक काव्य है जिसका प्रमुख प्रतिपाद्य प्रेम है। नागमती के प्रेम में असाधारण संवेदनषीलता है जो कि पाठक में भी करूणा उत्पन्न कर देती है। पद्मावत से एक उदाहरण देखिए –

दहि कोइल भई कंत सनेहा। तोला मांसु रहा नहिं देहा। 5
रक्त न रहा विरह तन जरा। रती रती होई नैनन्हिं ढरा।

यद्यपि पदमावत में वीर, करूण, वात्सल्य आदि रसों का यथास्थान प्रयोग हुआ है परन्तु श्रृंगार ही इस काव्य का प्रधान रस है। जायसी ने पदमावत में श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का बराबर वर्णन किया है। संयोग का चित्रण रत्नसेन, नागमती तथा पदमावती के द्वारा किया गया है। वियोग वर्णन में कवि को विषेष सफलता मिली है। नागमती का विरह और कवि द्वारा वर्णित बारहमासा आदि का वर्णन बड़ा ही अनूठा है। वियोग वर्णन में सम्भवतः जायसी को अधिक सफलता मिली है। पदमावत में नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य में अलौकिक एवं अद्वितीय है। एक उदाहरण देखिए –

सुआ काल होई लेदूगा पीए पीड़ नहिं जात रात बरू जींउ। 6
भएउ नारायण बाबन करा। राज करत राजा बलि छरा।।

इसी तरह प्रकृति वर्णन में भी जायसी अद्वितीय है। प्रकृति के आलम्बन, उद्दीपन, मानवीकरण अलंकरण आदि सभी रूपों का सफलतापूर्वक वर्णन किया है। उन्होनें एक ओर वन, नदी, पर्वत, सूर्य, चांद, आकाष तथा वृक्षों का वर्णन किया है। वही दूसरी ओर गांव, नगर रणसज्जा सेना का प्रस्थान जल क्रेलि आदि का भी बहुत सुन्दर वर्णन किया गया है।

कीन्हेसिं हेवैं समुद्र अपारा। कीन्हेसिं मेरु खिखिद पहारा। 7
कीन्हेसि नदी नार औ झरना। कीन्हेसि नगर मच्छ बहु बरना।
कीन्हेसि सीप मोती बहु भरे। कीन्हेसि बहुतइ नग निरमरे।।

"जायसी अद्भुत कवि है तथा प्रेमाख्यानक परम्परा में पदमावत का स्थान सर्वोपरि है, क्योंकि इसमें सूफी साधना की प्रतीकात्मकता का सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है। चन्दायन और मृगावती में जो त्रुटियां थी वे सभी इसमें दूर की गई है।"8

पद्मावत वास्तव में भारतीय लोक संस्कृति और लोक जीवन का महाकाव्य है। जायसी ने एक और उपक्रम किया है, उन्होनें कबीर के खंडनात्मक स्तर को नकारते हुए मंडनात्मक स्तर को अपनाया तथा हिन्दुओं और मुसलमानों के अजनबीपन को दूर कर एक दूसरे के समीप लाने का स्तुत्य प्रयास किया। इसके अतिरिक्त जायसी ने ग्रामीण संस्कृति, पर्वो, त्यौहारों, आदर्षो का खुलकर वर्णन किया।

"पदमावत का भाव एवं कला पक्ष दोनों एक समान सबल है। इसकी भाषा बोलचाल की अवधी है, जिसमें मुहावरों और लोकोक्तियों का भरपूर वर्णन किया गया है।" 9

काव्य में अनायास ही यत्र–तत्र उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिष्योक्ति, दृष्टान्त, समासोक्ति, अन्योक्ति आदि अलंकारो का खुलकर प्रयोग किया गया है जायसी की हिन्दी साहित्य को यह देन है कि उन्होनें परवर्ती सूफी काव्यों को अत्यधिक प्रभावित किया।

"पदमावत एक ओर प्रतीकात्मक रूप में सूफी–साधना को वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक पुट द्वारा इसकी रोचकता में अभिव्यक्ति हुई है।" 10

जायसी असाधारण कवि थे, जिनमें महाकवियों जैसी उदात्त प्रतिभा भी विद्यमान थी, जिसके कारण उनकी रचना काव्य गुणों की दृष्टि से भी अद्वितीय बनी है। यही कारण है कि प्रेमाख्यान परम्परा में पदमावत का स्थान सर्वोपरि है।

सन्दर्भ सूची –

1. जायसी ग्रन्थावली – सम्पादक आचार्य रामचन्द शुक्ल
2. मान सरोदक खण्ड – चौपाई 02
3. मान सरोदक खण्ड – चौपाई 04
4. जायसी ग्रन्थावली – सम्पादक आचार्य रामचन्द शुक्ल
5. राजा सुआ संवाद – चौपाई 14
6. नागमती – सुआ संवाद चौपाई – 08
7. स्तुति खण्ड – 02
8. जायसी ग्रन्थावली – सम्पादक, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पृष्ठ 112
9. वहीं पृष्ठ – 112
10. वहीं पृष्ठ – 86